बिहार में किसान आन्दोलन और कार्यरत संगठन : एक अवलोकन

ज्योति कुमारी

उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में बड़े पैमाने पर बंगाल से निलहे बागान मालिकों ने बिहार में आकर शरण ली और यहाँ के किसानों को अपने शोषण का शिकार बनाया। उनके खिलाफ किसानों ने सबसे पहले 1866–67 ई0 में मधुबनी के पंडौल नामक स्थान पर विद्रोह किया। 1883 ई0 में किसानों ने दरभंगा राज के खिलाफ आन्दोलन किया। उनके उपरान्त तो उनके विद्रोहों का तांता लग गया। लेकिन ये सारे विद्रोह असंगठित थे। इसलिए तुरन्त ही इसे दबा दिया गया।

लेकिन 1916–17 में चम्पारण में अंग्रेज नील कोठी वालों के खिलाफ किसानों का असंतोष पहली बार व्यापक और विस्फोटक बना। महात्मा गाँधी के नेतृत्व में चम्पारण में निलहों के खिलाफ सत्याग्रह किया गया और लम्बे समय से चले आ रहे तीन कठिया पद्धति का अन्त किया गया। यह चम्पारण सत्याग्रह किसान आन्दोलन और राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन के इतिहास में एक नींव स्तम्भ बन गया। कांग्रेस ने भी 1917 के बाद कृषकों की समस्याओं की ओर सरकार का ध्यान आकर्षित करने के लिए कृषक संघों की स्थापना को प्रोत्साहित किया। नागरिक अवज्ञा आन्दोलन के बाद किसानों के स्वतंत्र संगठनों के निर्माण की प्रक्रिया में तेजी आई । किसान आन्दोलन के आगे बढे। उनकी यह भी मान्यता थी कि जब किसान अपने वर्ग की मांगों के साथ स्वराज्य के राष्ट्रीय संघर्ष में भाग लेंगे तभी यह संघर्ष सफल हो सकेगा। कांग्रेज, सोशलिस्ट पार्टी (समाजवादी कांग्रेस), कम्युनिस्ट पार्टी और जवाहरलाल नेहरू जैसे वामपंथी राष्ट्रवादियों ने देश में किसान–संगठनों की आवश्यकता पर जोर दिया।